http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 5, 31-37

Article ID:583

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में महिलाओं की भूमिका

अभिषेक रंजन[1*], शिवम पाठक[2], अंकुश राज[3], प्रद्युम्न महतो[4]

[1,2,3,4]पीएच.डी. रिसर्च स्कॉलर, सस्य विज्ञान विभाग, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय,(पूसा) समस्तीपुर - 848125

*अनुरूपी लेखक

अभिषेक रंजन*

महिलाएँ कृषि तथा घरेलू खाद्य प्रणालियों में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में प्रमुख प्रेरक शक्ति हैं। यह पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धति स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों, पारंपरिक ज्ञान तथा जैविक प्रक्रियाओं पर आधारित है, जो सुरक्षित खाद्य उत्पादन के साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य और जैव विविधता की पुनर्स्थापना करती है। महिलाएँ जीवामृत, बीजामृत, कम्पोस्ट तथा वनस्पति आधारित अर्क तैयार करने, बीज संरक्षण, पशुपालन, फसल विविधीकरण तथा कृषि उत्पादों के विपणन में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। उनका पारंपरिक ज्ञान और परिवार के पोषण के प्रति समर्पण सतत कृषि को सुदृढ़ करता है। स्वयं सहायता समूहों तथा किसान संगठनों के माध्यम से महिलाएँ नवाचार और प्राकृतिक खेती के प्रसार में नेतृत्व करती हैं। प्रशिक्षण, ऋण, डिजिटल तकनीकों और बाजार तक पहुँच प्रदान कर महिलाओं को सशक्त बनाने से प्राकृतिक खेती का विस्तार तेज़ी से किया जा सकता है, जिससे लचीली और पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ कृषि प्रणालियों का विकास संभव होगा।

भारत तथा अनेक विकासशील देशों की कृषि व्यवस्था महिलाओं के श्रम, ज्ञान और अनुभव पर व्यापक रूप से निर्भर करती है। महिलाएँ बीज चयन, नर्सरी प्रबंधन, रोपाई, निराई-गुड़ाई, कटाई, पशुपालन तथा कटाई उपरांत प्रसंस्करण जैसे कृषि कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। साथ ही, वर्तमान कृषि अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें मृदा उर्वरता में गिरावट, कृषि आदानों की बढ़ती लागत, भूजल स्तर में कमी, जैव विविधता का ह्रास तथा जलवायु परिवर्तन प्रमुख हैं। इन समस्याओं के समाधान के रूप में प्राकृतिक खेती एक प्रभावी और टिकाऊ विकल्प के रूप में उभरकर सामने आई है, जो रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता को कम करती है तथा पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देती है।

प्राकृतिक खेती स्थानीय संसाधनों के उपयोग, देशी गाय आधारित तैयारियों, मृदा जैविक सक्रियता में वृद्धि, मल्चिंग, विविध फसल प्रणालियों तथा बाहरी आदानों के न्यूनतम उपयोग के सिद्धांतों पर आधारित है। चूँकि यह प्रणाली महंगे खरीदे गए आदानों के बजाय स्थानीय संसाधनों और सावधानीपूर्वक प्रबंधन पर निर्भर करती है, इसलिए महिलाएँ इसके अपनाने और प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। उनकी भूमिका केवल श्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि नवाचार, निर्णय-निर्माण, सामुदायिक संगठन और कृषि उत्पादों के विपणन तक विस्तृत है। यह लेख प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में महिलाओं के योगदान, उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों तथा उपलब्ध अवसरों पर विस्तृत चर्चा करता है।

2. प्राकृतिक खेती की अवधारणा

प्राकृतिक खेती एक समग्र (Holistic) कृषि पद्धति है, जिसका उद्देश्य प्रकृति के विरुद्ध कार्य करने के बजाय प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करके कृषि उत्पादन करना है। यह पद्धति स्थानीय संसाधनों, पारंपरिक ज्ञान, जैविक प्रक्रियाओं तथा प्राकृतिक चक्रों पर आधारित होती है। भारत में प्राकृतिक खेती को Bharatiya Prakritik Krishi Paddhati (बीपीकेपी) तथा विभिन्न राज्यों के प्राकृतिक खेती मिशनों के माध्यम से व्यापक प्रोत्साहन मिला है। इसके प्रमुख घटकों में बीज उपचार हेतु बीजामृत, सूक्ष्मजीवी सक्रियता बढ़ाने के लिए जीवामृत एवं घनजीवामृत, मृदा नमी संरक्षण के लिए मल्चिंग तथा मृदा में अनुकूल वायु-संचार बनाए रखने के लिए वाफसा (Waaphasa) शामिल हैं।

प्राकृतिक खेती मृदा कार्बनिक पदार्थ, सूक्ष्मजीवी गतिविधि, पोषक तत्व चक्रण तथा जल उपयोग दक्षता में सुधार करती है, साथ ही उत्पादन लागत को कम करती है। यह फसलों की सूखा, कीटों और रोगों के प्रति सहनशीलता को भी बढ़ाती है। चूँकि प्राकृतिक खेती में प्रयुक्त अधिकांश आदान घर या खेत स्तर पर तैयार किए जाते हैं, इसलिए महिलाओं का पारंपरिक ज्ञान, कौशल और सक्रिय सहभागिता इसकी सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3. प्राकृतिक खेती में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका

महिलाओं के पास बीज संरक्षण, औषधीय पौधों के उपयोग, पशुपालन तथा घरेलू पोषण से संबंधित समृद्ध पारंपरिक ज्ञान होता है। वे प्रायः रसोई बागवानी, कम्पोस्ट निर्माण, पशु प्रबंधन तथा स्थानीय जैव विविधता के संरक्षण की जिम्मेदारी निभाती हैं। प्राकृतिक खेती ऐसी ही क्षमताओं, कौशलों और पारंपरिक अनुभवों को महत्व देती है। इसलिए महिलाएँ प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों को समझने, अपनाने और प्रभावी ढंग से लागू करने में अत्यंत सक्षम होती हैं।

महिलाएँ सामान्यतः खाद्य सुरक्षा, परिवार के स्वास्थ्य और दीर्घकालिक स्थिरता को प्राथमिकता देती हैं। इसी कारण वे रसायन-मुक्त कृषि और विविधीकृत उत्पादन प्रणालियों की सशक्त समर्थक होती हैं, जो पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के साथ-साथ स्थिर आय सुनिश्चित करती हैं। प्राकृतिक खेती में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से इस पद्धति को अपनाने की दर बढ़ती है तथा समुदाय आधारित सीखने और किसान-से-किसान ज्ञान प्रसार को भी मजबूती मिलती है।

4. प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में महिलाओं की प्रमुख भूमिकाएँ

4.1 प्राकृतिक आदानों की तैयारी

महिलाएँ प्राकृतिक खेती में उपयोग होने वाले महत्वपूर्ण आदानों जैसे बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, कम्पोस्ट, वर्मी-कम्पोस्ट तथा विभिन्न वनस्पति अर्कों की तैयारी में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन तैयारियों में देशी गाय का गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन या दाल का आटा तथा स्थानीय रूप से उपलब्ध पौध सामग्री का उपयोग किया जाता है। इन आदानों की तैयारी के लिए कौशल, धैर्य और पारंपरिक ज्ञान की आवश्यकता होती है, जो महिलाओं में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। ये जैविक घोल लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ाते हैं, पोषक तत्वों की उपलब्धता में सुधार करते हैं तथा रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता को कम करते हैं।

4.2 बीज चयन एवं संरक्षण

महिलाएँ पारंपरिक रूप से देशी बीजों की संरक्षक रही हैं। वे स्वस्थ, सशक्त और गुणवत्तायुक्त बीजों का चयन करती हैं, उनकी शुद्धता बनाए रखती हैं तथा भविष्य की बुवाई के लिए सुरक्षित रखती हैं। सामुदायिक बीज विनिमय प्रणालियों के माध्यम से महिलाएँ स्थानीय फसल विविधता का संरक्षण करती हैं और जलवायु-सहनशील तथा पोषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण किस्मों की उपलब्धता सुनिश्चित करती हैं।

4.3 मृदा एवं पोषक तत्व प्रबंधन

महिलाएँ खेतों में मल्च, फसल अवशेष, कम्पोस्ट और गोबर की खाद का उपयोग करती हैं। इन प्रथाओं से मृदा कार्बनिक कार्बन की मात्रा बढ़ती है, सूक्ष्मजीवी गतिविधि में सुधार होता है, मृदा संरचना सुदृढ़ होती है तथा पोषक तत्वों के चक्रण और नमी संरक्षण की क्षमता में वृद्धि होती है।

4.4 फसल विविधीकरण

महिलाएँ मिश्रित खेती, अंतरवर्तीय खेती, रसोई बागवानी तथा पोषण वाटिकाओं को बढ़ावा देती हैं। ये विविधीकृत कृषि प्रणालियाँ खेत की सहनशीलता को बढ़ाती हैं, कीट एवं रोगों के प्रकोप को कम करती हैं तथा परिवार के लिए विभिन्न प्रकार के पौष्टिक खाद्य पदार्थों जैसे फल, सब्जियाँ, दालें और मसालों की उपलब्धता सुनिश्चित करती हैं। इससे पोषण सुरक्षा और आय स्थिरता दोनों में सुधार होता है।

4.5 पशुधन एकीकरण

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, और महिलाएँ प्रायः उनकी मुख्य देखभालकर्ता होती हैं। वे पशुओं के चारे, स्वास्थ्य प्रबंधन तथा गोबर और गोमूत्र के संग्रहण का कार्य करती हैं, जो बीजामृत, जीवामृत और अन्य प्राकृतिक आदानों की तैयारी के लिए आवश्यक होते हैं। इस प्रकार महिलाएँ पशुपालन और कृषि के समन्वय को सुदृढ़ बनाती हैं।

4.6 कीट एवं रोग प्रबंधन

महिलाएँ नीम आधारित तथा अन्य वनस्पति अर्क तैयार करके कीटों और रोगों का पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन करती हैं। ये जैविक उपाय रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग को कम करते हैं, लाभकारी कीटों और सूक्ष्मजीवों की रक्षा करते हैं तथा खेत के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखते हैं।

4.7 कटाई उपरांत प्रसंस्करण एवं विपणन

महिलाएँ प्राकृतिक कृषि उत्पादों की सफाई, ग्रेडिंग, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्वयं सहायता समूहों (SHGs) तथा महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों के माध्यम से वे कृषि उत्पादों में मूल्य संवर्धन करती हैं और परिवार की आय में उल्लेखनीय वृद्धि करती हैं।

Source: https://www.kisantak.in/

5. मृदा स्वास्थ्य एवं जैव विविधता में महिलाओं का योगदान

महिलाओं द्वारा अपनाई जाने वाली प्राकृतिक खेती की तकनीकें मृदा के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में उल्लेखनीय सुधार करती हैं। कम्पोस्ट, मल्च, जीवामृत, घनजीवामृत तथा अन्य सूक्ष्मजीवी तैयारियों के उपयोग से मृदा कार्बनिक कार्बन की मात्रा बढ़ती है, मृदा कणों की स्थिरता (Aggregate Stability) में सुधार होता है तथा पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है। इसके परिणामस्वरूप लाभकारी सूक्ष्मजीवों और केंचुओं की संख्या में वृद्धि होती है, जिससे मृदा संरचना बेहतर होती है, जल धारण क्षमता बढ़ती है और नमी संरक्षण में सुधार होता है।

महिलाएँ स्थानीय फसल किस्मों, औषधीय पौधों, चारा प्रजातियों तथा लाभकारी कीटों का संरक्षण करके कृषि जैव विविधता (Agro-biodiversity) को समृद्ध करती हैं। यह संरक्षण परागण, जैविक कीट नियंत्रण, पोषक तत्व चक्रण और पारिस्थितिक संतुलन जैसी महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिकी सेवाओं को सुदृढ़ करता है। इस प्रकार महिलाओं का योगदान कृषि पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता, उत्पादकता और दीर्घकालिक लचीलापन बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

6. सामाजिकआर्थिक एवं - पोषण संबंधी लाभ

प्राकृतिक खेती ग्रामीण महिलाओं और उनके परिवारों के लिए महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक तथा पोषण संबंधी लाभ प्रदान करती है। स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों के उपयोग और महंगे रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर निर्भरता कम होने के कारण खेती की लागत में उल्लेखनीय कमी आती है और शुद्ध कृषि आय में वृद्धि होती है। बीज उत्पादन, प्राकृतिक आदानों की तैयारी, मूल्य संवर्धन तथा प्रत्यक्ष विपणन से जुड़े महिला-नेतृत्व वाले उद्यम अतिरिक्त रोजगार और आय के अवसर उत्पन्न करते हैं। स्वयं सहायता समूहों (SHGs) में भागीदारी से महिलाओं की वित्तीय समावेशन, ऋण तक पहुँच तथा सामूहिक सौदेबाजी क्षमता सुदृढ़ होती है।

विविधीकृत कृषि प्रणालियाँ तथा रसोई बागवानी परिवार को फल, सब्जियाँ, दलहन और मसालों की नियमित उपलब्धता सुनिश्चित करती हैं, जिससे आहार विविधता और पोषण सुरक्षा में सुधार होता है। इसके अतिरिक्त, कृषि रसायनों के कम उपयोग से महिलाओं और बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर रहता है। इस प्रकार प्राकृतिक खेती सुरक्षित खाद्य प्रणाली, स्वस्थ ग्रामीण समुदाय और सतत आजीविका के

निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

7. महिलानेतृत्व वाली संस्थाएँ - एवं सफलता की कहानियाँ

भारत भर में महिला-नेतृत्व वाली संस्थाएँ, जैसे स्वयं सहायता समूह (Self-Help Groups; SHGs), सहकारी समितियाँ तथा किसान उत्पादक संगठन (Farmer Producer Organizations; FPOs), प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के प्रभावशाली मंच के रूप में उभरी हैं। ये संस्थाएँ प्रशिक्षण, खेत प्रदर्शन, प्राकृतिक आदान निर्माण इकाइयाँ, सामुदायिक बीज बैंक तथा सामूहिक विपणन जैसी सुविधाएँ प्रदान करती हैं। सामूहिक रूप से कार्य करने से महिलाओं को ऋण, तकनीकी ज्ञान और स्थानीय बाजारों में बेहतर सौदेबाजी क्षमता प्राप्त होती है। साथ ही, ये संस्थाएँ नेतृत्व विकास, उद्यमिता तथा समुदाय-आधारित कृषि विस्तार को भी प्रोत्साहित करती हैं।

भारत के अनेक राज्यों जैसे Andhra Pradesh, Himachal Pradesh, Uttarakhand और Gujarat में महिला-नेतृत्व वाली प्राकृतिक खेती पहलों ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। महिला किसान तथा सामुदायिक संसाधन व्यक्ति किसान-से-किसान प्रशिक्षण और श्रेष्ठ कृषि प्रथाओं के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी उपलब्धियाँ यह सिद्ध करती हैं कि महिलाएँ केवल कृषि की सहभागी नहीं हैं, बल्कि सतत और पर्यावरण-अनुकूल कृषि प्रणालियों को आगे बढ़ाने वाली परिवर्तनकारी नेता हैं।

8. महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियाँ

- **भूमि पर सीमित स्वामित्व एवं नियंत्रण:** अनेक महिलाओं के पास कृषि भूमि का कानूनी स्वामित्व नहीं होता, जिससे उनकी निर्णय लेने की क्षमता सीमित हो जाती है तथा वे सरकारी योजनाओं, अनुदानों और संस्थागत सहायता का पूरा लाभ नहीं उठा पातीं।
- **ऋण एवं बीमा तक सीमित पहुँच:** भूमि स्वामित्व और पर्याप्त जमानत के अभाव में महिलाओं को बैंक ऋण, फसल बीमा तथा अन्य वित्तीय सहायता प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- **अपर्याप्त प्रशिक्षण एवं विस्तार सेवाएँ:** तकनीकी प्रशिक्षण, खेत प्रदर्शन और कृषि परामर्श सेवाओं तक सीमित पहुँच के कारण महिलाएँ प्राकृतिक खेती की उन्नत तकनीकों को प्रभावी रूप से अपनाने और विस्तार देने में बाधाओं का सामना करती हैं।
- **घरेलू एवं कृषि कार्यों का अधिक भार:** महिलाएँ एक साथ घरेलू जिम्मेदारियाँ, बच्चों की देखभाल, पशुपालन तथा खेत प्रबंधन करती हैं, जिससे समय की कमी और शारीरिक श्रम का बोझ बढ़ जाता है।
- **कृषि यंत्रों एवं डिजिटल तकनीकों तक सीमित पहुँच:** श्रम-बचत उपकरणों, मोबाइल आधारित सलाह सेवाओं और डिजिटल प्लेटफॉर्म की कमी के कारण महिलाओं की कार्यक्षमता और सूचना तक पहुँच सीमित रहती है।
- **निर्णय-निर्माण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएँ:** पारंपरिक मान्यताएँ और लैंगिक असमानताएँ महिलाओं को कृषि योजना, वित्तीय निर्णयों और नेतृत्व भूमिकाओं में पूर्ण भागीदारी से रोकती हैं।
- **कमजोर बाजार संपर्क एवं उचित मूल्य का अभाव:** महिलाओं को लाभकारी बाजारों, प्रमाणन प्रणालियों और मूल्य श्रृंखलाओं तक प्रत्यक्ष पहुँच कम मिलती है, जिससे प्राकृतिक खेती से होने वाली आय सीमित रह जाती है।

9. महिलाओं की भागीदारी को सशक्त बनाने की रणनीतियाँ

- **भूमि अधिकार एवं उत्पादक संसाधनों तक पहुँच सुनिश्चित करना:** महिलाओं को कृषि भूमि का कानूनी स्वामित्व या संयुक्त स्वामित्व प्रदान करना तथा पशुधन, सिंचाई सुविधाओं और कृषि उपकरणों तक पहुँच उपलब्ध कराना उनकी निर्णय-निर्माण क्षमता और सरकारी

योजनाओं में पात्रता को सुदृढ़ करता है।

- **प्राकृतिक खेती पर लक्षित प्रशिक्षण प्रदान करना:** बीजामृत, जीवामृत, मल्चिंग, बीज संरक्षण, फसल विविधीकरण तथा पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम महिलाओं के तकनीकी कौशल, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को बढ़ाते हैं।
- **महिला-नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों एवं उत्पादक संगठनों को बढ़ावा देना:** महिलाओं की स्वयं सहायता समूहों (SHGs), सहकारी समितियों और किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) में सक्रिय भागीदारी से सामूहिक कार्य, नेतृत्व विकास और बाजार तक पहुँच में सुधार होता है।
- **ऋण, अनुदान एवं बीमा सुविधाओं को सुलभ बनाना:** संस्थागत वित्त, कृषि अनुदान और फसल बीमा तक आसान पहुँच महिलाओं को प्राकृतिक खेती में निवेश करने तथा वित्तीय जोखिम कम करने में सहायता करती है।
- **श्रम-बचत उपकरण एवं डिजिटल परामर्श सेवाओं का विकास:** महिला-अनुकूल कृषि उपकरण, मोबाइल एप्लिकेशन और डिजिटल विस्तार सेवाएँ कार्यभार को कम करती हैं और वास्तविक समय पर तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराती हैं।
- **स्थानीय प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन इकाइयों की स्थापना:** सामुदायिक स्तर पर ग्रेडिंग, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग इकाइयों की स्थापना से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और प्राकृतिक उत्पादों से आय में वृद्धि होती है।
- **विशेष बाजार एवं प्रमाणन सहायता उपलब्ध कराना:** महिलाओं को प्रमाणित प्राकृतिक उत्पाद बाजारों तथा ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से जोड़ने से बेहतर मूल्य प्राप्त होता है और उपभोक्ताओं का विश्वास बढ़ता है।
- **महिला नवप्रवर्तकों एवं मास्टर प्रशिक्षकों को सम्मानित करना:** सफल महिला किसानों और सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों को पहचान और पुरस्कार देने से प्रेरणा मिलती है तथा प्राकृतिक खेती में महिलाओं का नेतृत्व और अधिक मजबूत होता है।

10. भारत में नीतिगत समर्थन

भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण और प्राकृतिक खेती के प्रसार के लिए अनेक सरकारी कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। National Rural Livelihoods Mission (राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन), Bharatiya Prakritik Krishi Paddhati (भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति) तथा विभिन्न राज्य स्तरीय प्राकृतिक खेती मिशन महिलाओं को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, उद्यमिता विकास और सामुदायिक नेतृत्व के अवसर प्रदान करते हैं। कृषि, ग्रामीण विकास तथा महिला एवं बाल विकास विभागों के बीच प्रभावी समन्वय से इन कार्यक्रमों की पहुँच और प्रभावशीलता को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

नीतियों में महिलाओं को स्पष्ट रूप से "किसान" के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए तथा प्रशिक्षण, प्रोत्साहन, ऋण, अनुदान और नेतृत्व भूमिकाओं में उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इससे प्राकृतिक खेती में उनकी भागीदारी और निर्णय-निर्माण क्षमता सुदृढ़ होगी।

11. भविष्य की संभावनाएँ

प्राकृतिक खेती का भविष्य सक्रिय सामुदायिक भागीदारी, स्थानीय नवाचारों और समावेशी कृषि विकास से गहराई से जुड़ा हुआ है। महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे जलवायु-सहिष्णु कृषि, मृदा स्वास्थ्य पुनर्स्थापन, कार्बन अवशोषण, जैव विविधता संरक्षण तथा सतत खाद्य प्रणालियों को आगे बढ़ाने में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी। उनका पारंपरिक ज्ञान, नेतृत्व क्षमता और उद्यमशीलता कौशल विविध कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों में प्राकृतिक खेती के विस्तार के लिए अत्यंत आवश्यक होंगे। उभरती हुई तकनीकें जैसे डिजिटल परामर्श प्लेटफॉर्म,

e-ISSN: 2583 - 0430

मोबाइल एप्लिकेशन, ई-कॉमर्स तथा उत्पाद अनुरेखण (Traceability) प्रणालियाँ महिलाओं द्वारा संचालित उद्यमों के लिए प्राकृतिक आदान निर्माण, मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग और विपणन में नए अवसर उत्पन्न कर सकती हैं। उचित नीतिगत समर्थन, क्षमता निर्माण और बाजार तक बेहतर पहुँच के माध्यम से महिलाएँ भविष्य में लचीली, लाभकारी और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ प्राकृतिक खेती प्रणालियों की प्रमुख प्रेरक शक्ति बनेंगी।

12. निष्कर्ष

महिलाएँ प्राकृतिक खेती की आधारशिला हैं और सतत कृषि को आगे बढ़ाने वाली सबसे प्रभावशाली शक्तियों में से एक हैं। प्राकृतिक खेती की सफलता में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे बीजामृत, जीवामृत तथा अन्य प्राकृतिक आदानों की तैयारी, देशी बीजों के संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, फसल विविधीकरण, पशुधन एकीकरण तथा कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण और विपणन में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। उनके पारंपरिक ज्ञान, व्यावहारिक कौशल, नेतृत्व क्षमता और परिवार के स्वास्थ्य एवं पोषण के प्रति समर्पण से प्राकृतिक खेती को व्यापक स्तर पर अपनाने में सहायता मिलती है।

यदि महिलाओं के समक्ष मौजूद संरचनात्मक बाधाओं, जैसे भूमि स्वामित्व की कमी, वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुँच, अपर्याप्त प्रशिक्षण और कमजोर बाजार संपर्क, को दूर किया जाए तथा उनकी क्षमताओं में निवेश किया जाए, तो प्राकृतिक खेती का प्रसार तेजी से किया जा सकता है। इससे ग्रामीण आजीविकाओं में सुधार, मृदा स्वास्थ्य की पुनर्स्थापना, जैव विविधता संरक्षण तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।